दिनांक :- 08-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- दस

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- डॉ० सनयात सेन

जीवन चरित्र :- डॉ० सनयात सेन (Dr. Sunyat sen) चीनी क्रांति के जनक कहे जाते है। उनका जन्म 1866 मे दक्षिण चीन के कैंटन डेल्टा के सियाँग शासन नामक स्थान पर एक निर्धन किसान परिवार मे हुआ। उनके बचपन का नाम सन वेन था। बचपन मे तेपिंग विद्रोह की कहानियाँ सुनने से उनके मस्तिष्क पर

गहरा प्रभाव पड़ा। तेरह वर्ष की उम्र में वे होनोलूलू गए वहीं उनकी प्रारंभिक शिक्षा आरंभ हुई वहां वे पांच वर्षों तक रहे। पश्चिमी विचार उनके मस्तिष्क में घर करने लगे। पश्चिमी शिक्षा से प्रभावित होकर उन्होंने ईसाई धर्म अंगीकार कर लिया। इसके बाद हांग-कांग के मेडिकल कालेज से उन्होंने स्नातक की उपाधि प्राप्त की। वे प्रारम्भ से ही उन्नत विचार के थे। वे चाहते थे कि चीन के लोगों के परम्परागत रूढ़िग्रस्त विचारों में परिवर्तन हो और उनका पश्चिमीकरण हो अपने अध्ययन काल में और विशेषकर जब वे हांगकांग के मेडिकल कालेज में पढ़ते थे. अपने विचार वाले साथियों के साथ अपनी सारी महत्वाकांक्षाओं और उद्देश्यों के सम्बंध में विचार विमर्श करते थे।

1892 में मेडिकल का स्नातक बनने के बाद उन्होंने

Scanned with CamScanner

मकाओ में डाक्टरी प्रारंभ की लेकिन उनका इसमें मन नहीं लगता था। वे चीन की दुर्दशा से काफी चिन्तित थे और इसके मूल में मंचू राजवंश को उत्तर दायी समझते थे। अतः उन्होंने मंचू राजवंश के उन्मूलन के लिए गम्भीरतापूर्वक सोचना शुरू कर दिया। मंचू सरकार इस दृष्टिकोण से उन्होंने एक सुधार वादी समाज (Hsing-chung Hui: Reformist Society) की स्थापना की। इसके अधिकांश सदस्य प्रोटेस्टेंट मिशन स्कूलों में शिक्षा प्राप्त कर चुके थे। शीघ्र ही पौर्तुगाली सरकार ने सेन को मकाओ छोड़ने के लिए बाध्य कर दिया।

डॉ० सेन मकाओ के बाद कैंटन पहुँचे। वहाँ उन्होंने पिकिंग सरकार से एक कृषि विद्यालय खोलने के लिए आवेदन पत्र भेजा। लेकिन उसके आवेदन

Scanned with CamScanner

पत्र की कोई सुनवाई नहीं हुई। इस पर सेन का मंचू शासन से मन ऊब गया और वे इसके मूलोच्छेदन के लिए कटिबद्ध हो गए। यहीं से उनका राजनीतिक जीवन शुरू हुआ। उन्होंने गुप्त रूप से क्रांति करने के लिए लोगों का संगठन कायम करना शुरू कर दिया। मंचू सरकार उनकी गतिविधियों से अवगत हो गई। उनके साथियों को कैद किया जाने लगा। कुछ लोग तो देश छोड़कर विदेशों में भाग गए। डॉ सेन भी भागकर 1895 में हांग कांग पहुँचे। वहाँ से वे जापान चले गए।

1894-95 के चीन जापान युद्ध में चीन की पराजय हो गई। डॉ० सेन को इससे मर्मान्तक पीड़ा हुई। उन्होंने इसके लिए मंचू सम्राट को उत्तरदायी बतलाया और उसे हटाने के लिए विद्रोह भी कर दिया। किंतु यह विद्रोह असफल रहा। इसके बाद से भागकर इंगलैंड पहुँचे।

Scanned with CamScanner

वहाँ चीनी प्रवासियों ने उनके दल की सहायता के लिए चन्दा इकट्ठा किया। इसी बीच सेन को भगा लिया गया और लन्दन के चीनी दूतावास में उन्हें अवैध ढंग से रखा गया। बाद में ब्रिटिश विदेश मंत्रालय के हस्तक्षेप करने से उन्हें छोड़ दिया गया। इस घटना से उनकी लोकप्रियता काफी बढ़ गई।

1899 में चीन में बॉक्सर विद्रोह हुआ। डॉ० सेन को भाग लिया गया और लन्दन के चीनी दूतावास में उन्हें अवैध ढंग से रखा गया। बाद में ब्रिटिश विदेश मंत्रालय के द्वारा हस्तक्षेप करने से उन्हें छोड़ दिया गया। इस घटना से उनकी लोकप्रियता काफी बढ़ गई।

1899 में चीन में बॉक्सर विद्रोह हुआ। डॉ० सेन ने इस स्थिति का लाभ उठाया। उन्होंने विदेशों में रहने वाले चीनियों से सम्पर्क स्थापित किया और उन्हें चीन

Scanned with CamScanner

की दुर्दशा से अवगत कराया। उन्हें अपने दल के संगठन के लिए प्रवासी चीनियों से काफी चन्दे भी प्राप्त हुए अन्त में उन्होंने चीन में अनेक गुप्त क्रांतिकारी समितियों को एक ही में मिलाकर अगस्त 1905 में तुंग-मेंग-हुई का संगठन किया गया। इसके मुख्यतः दो उद्देश्य थे। मंचू वंश का पतन, चीन में गणतंत्र की स्थापना, विश्व शान्ति राष्ट्रीयता का विकास, जापान के साथ सहयोग एवं चीनी क्रांति के लिए दूसरे राज्यों का सहयोग प्राप्त करना इस संघ के द्वारा डॉ० सेन ने क्रांति का संचालन करने का निश्चय किया और इसके लिए उन्होंने काफी धन भी इकट्ठा कर लिया।

तुंग-मेंग हुई दल गुप्त रूप से कार्य करने लगा। 1911 की क्रांति में इसने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। अक्टूबर 1911 में जब चीन में क्रांति में इसने महत्वपूर्ण क्रांति की खबर

पाते ही वे चीन वापस आ गए। 1911 में जब चीन में क्रांति हुई, तब डॉ० सेन अमरीका में थे। क्रांति की खबर पाते ही वे चीन में वापस आ गए। जनवरी 1912 को क्रांतिकारियों ने उन्हें नये गणतंत्र का राष्ट्रपति चुन लिया। लेकिन जब प्रधानमंत्री युआन शिकाई ने यह वादा किया कि वह चीनी में एकता ही स्थापना करेगा और गणतंत्र की नींव डालेगा, तो देशहित को ध्यान में रखकर उन्होंने राष्ट्रपति के पद से त्याग पत्र दे दिया। युआन शिकाई सम्पूर्ण चीन का राष्ट्रपति स्वीकार कर लिया गया।

राष्ट्रपति पद का त्याग कर डॉ. सेन ने अपनी अपूर्व देश भक्ति का परिचय दिया। किंतु, इसके बाद भी वे निष्क्रिय या बेकार बैठे नहीं रहे। वे राष्ट्रीयता का प्रचार करते रहे और लोगों को प्रेरणा देता रहे।

Scanned with CamScanner